केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री को दिल्ली 'गैस चेम्बर' नज़र आता है, एनसीआर नहीं

फ़रीदाबाद (म.मो.) हरियाणवी कहावत है, "**भैंस काले कंबल को देख कर बिदकती है पर अपने आपको नही देखती।**" वही काम केन्द्रीय पर्यावरण एवं श्रम मंत्री भूपेन्द्र सिंह यादव कर रहे हैं। दिल्ली में क्योंकि उनके धुर विरोधी केजरीवाल की सरकार है। इसलिये उन्हें दिल्ली का बढ़ता प्रदूषण गैस चेम्बर नज़र आता है। दिल्ली के चारों ओर भाजपा शासित गाजीयाबाद, फ़रीदाबाद, गुड़गांव, झज्जर, बहादुरगढ़ और सोनीपत आदि का भयंकर प्रदूषण नज़र नहीं आता। एनसीआर के इन तमाम शहरों का प्रदूषण स्तर किसी तरह भी दिल्ली से कम नहीं है।

फ़रीदाबाद की स्थिति को देख कर पूरे एनसीआर के प्रदूषण एवं उसके कारणों का अनुमान लगाया जा सकता है। सरकार को सैंकड़ों मील दूर जलने वाली पराली का धुआं तो नजर आ रहा है, इसे लेकर किसानों पर ताबड़तोड़ जुर्माने किये जा रहे हैं। लेकिन सरकारी निस्क्रीयता के चलते शहर में बढ़ता प्रदूषण नजर नहीं आ रहा। वैज्ञानिक आंकड़ों के आधार पर बताया जा रहा है कि पराली जलने से तो मात्र 20 प्रतिशत ही प्रदूषण होता है, शेष 80 प्रतिशत सड़कों व निर्माण कार्यों से उड़ने वाली धूल, वाहनों तथा जनरेटरों से निकलता धुआं, उद्योगों की चिमनी से निकलता काला धुआं तथा शहर में जहां-तहां जलाये जा रहे कूड़े विशेष कर रबर व प्लास्टिक आदि से निकलने वाला धुआं, शहर को गैस चेम्बर बना रहा है।

यूं तो तमाम सड़कों के किनारे पड़ी धूल को, तेज गति से चलते वाहन काफ़ी मात्रा में उड़ाते रहते हैं, लेकिन जब गड्ढों में सड़क और सड़कों में गड्ढे हों तो कोढ़ में खाज की स्थिति बनाते धूल के गुबार उड़ते रहते हैं। ये धूल कण इतने महीन होते हैं कि एक बार उड़ने के बाद तब तक हवा में रहते हैं जब तक अच्छी जोरदार बारिश न हो जाय। ये धूल कण फेफड़ों के लिये इतने हानिकारक होते हैं कि एक बार घुसने के बाद अंदर ही जम जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप सांस सम्बन्धी दमा जैसे भयंकर रोग हो जाते हैं। इस तरह के रोगियों की लम्बी कतारें आज कल अस्पतालों में देखी जा रही हैं।

सड़कों से धूल न उड़े इसके लिये जरूरी है कि वहां धूल ही न रहे। सड़कों के तमाम किनारे पक्के हों अथवा वहां घास लगी हों। इनकी सफाई के लये झाड़ू की बजाय धूल को अपने भीतर खींचने वाली वैक्यूम सफाई मशीने होनी चाहिये। ऐसी चार मशीने इस शहर में भी हैं। भारे पर ली गई ये मशीने खड़ी-खड़ी कर दाता के पैसे को डकार रही हैं क्योंकि शहर की टूटी-फूटी सड़कों पर तो ये चल ही नहीं सकती और बाकी सड़कों पर तेल फूंकने की बजाय सम्बन्धित अधिकारियों को मोटा कमीशन देकर इन्हें खड़ा रखने में ही फ़ायदा है। बीते कई सालों से टूट कर समाप्त हो चुकी सड़कों को बनाने की बजाय पानी छिड़कने की नौटंकी करके मोटे बिल डकारे जा रहे हैं।

सर्वविदित है कि साफ-सुथरी खाली सड़क से वाहन गुजर जायें तो उनसे कम धुआं निकलेगा। दूसरी ओर जब सड़कों पर जगह-जगह जाम लगे होंगे अथवा गड्ढे होंगे तो वाहन सामान्य गति से गुजरने की अपेक्षा अति धीमी गति से चलकर अथवा खड़े रह कर जो धुआं उगलेंगे उससे वायु प्रदूषण कई गुणा अधिक बढ़ता है। शहर में सड़कों की जो हालत है सो तो है ही, अच्छी-भली सड़कों पर अवैध पार्किंग ने जगह-जगह जाम की स्थिति बना रखी है। हाइवे से बाटा पुल होते हुए हार्डवेयर चौक से बीके चौक तथा यहां से अजरोंदा चौक का जो नमूना दिखता है, लगभग वही स्थिति शहर भर के सैंकड़ों स्थानों पर बनी रहती है। यदि प्रशासन की नीयत ठीक हो तो इस कृत्रिम जाम की स्थिति को समाप्त करके प्रदूषण हटाया जा सकता है।

जरूरत से ज्यादा बिजली पैदा करके निर्यात करने का दावा करने वाली सरकार न तो कारखानों को पर्याप्त बिजली दे पा रही है और न ही घरेलू एवं अन्य संस्थानों को। जाहिर है ऐसे में न चाहते हुए भी मजबूरन लोगों को जनरेटरों का सहारा लेना पड़ता है। यह बिजली महंगी तो पड़ती ही है वायु प्रदूषण को भी बेतहाशा बढ़ाती है। प्रदूषण नियंत्रण के नाम पर सरकार ने बेशक जनरेटर चलाने पर कड़ी पाबंदी लगा रखी है लेकिन जिसकी मजबूरी होती है वह सख्त पाबंदी का पालन करवाने वालों की सेवा-पानी करके अपना काम निकालता है। गैस एवं बिजली महंगी होने के चलते छोटे-मोटे उद्योगपति उत्पादन लागत को कम रखने के लिये कोयले अथवा लकड़ी आदि को ईंधन के रूप में प्रयोग करते हैं। ये लोग प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड वालों के नियमित पे मास्टर होते हैं।

सफ़ाई की अपर्याप्त व्यवस्था के चलते जगह-जगह आग लगा कर कूड़े का निस्तारण किया जा रहा है। इससे भी कहीं अधिक भयानक काम उन कबाड़ियों द्वारा किया जाता है जो रबर, प्लास्टिक आदि को जला कर उनसे जुड़ी धातुओं को अलग करते हैं। इस तरह के काम प्राय: रात के अंधेरे में ही किये जाते हैं,उस समय तापमान कम होने के चलते धुआं आसमान की ओर न जाकर धरती पर ही चारों ओर फैलता रहता है। इन्हें रोकने-थामने वाला कोई नहीं है। रसोइ गैस के भाव बेतहाशा बढ़ जाने के चलते गरीब लोगों का एक वर्ग लकड़ी व उपलों से चुल्हा जलाने को मजबूर हैं। जाहिर है इससे भारी मात्रा में उठने वाला धुआं प्रदूषण को बढ़ा रहा है।

यदि सरकार वास्तव में ही प्रदूषण से मुक्ति पाना चाहती है तो घरेलू गैस के दाम इतने कम करे कि जो हर गरीब उसका इस्तेमाल कर सके। सड़कों पर पानी छिड़कने की नौटंकी करके पैसा लूटाने की बजाय सड़कों को ही धूल रहित बनाये। जनरेटरों पर पावंदी की बजाय बिजली की पर्याप्त उपलब्धता को सुनिश्चत करे। ट्रैफिक व्यवस्था में वांछित सुधार करके सड़कों को जाम रहित बनाये। लेकिन लगता नहीं कि सरकार को यह सब समझ आने वाला है। राजनेताओं की नीयत काम करने की नहीं केवल गाल बजाने की है।

10 लाख की मेडिकल फीस का तुगलकी फैसला लागू

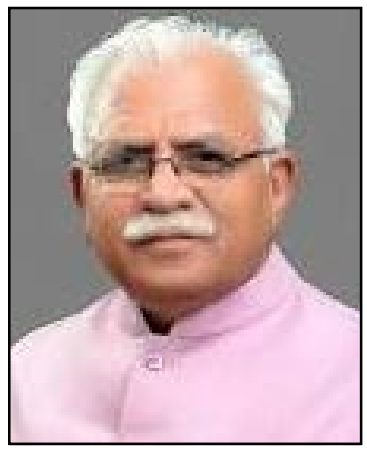

रोहतक (म.मो.) प्रतिभाशाली पर आर्थिक रूप से कमजोर छात्र हरियाणा के सरकारी मेडिकल कॉलेज में दाखिला नहीं ले सकेंगे। मजबूरी में दूसरे राज्यों के मेडिकल कॉलेज में जाना पड़ेगा। मनोहर सरकार ने फैसला किया है की प्रदेश के मेडिकल कॉलेज में दाखिले के लिए प्रति वर्ष दस लाख रुपया जमा करवाने होंगे। यानी चार साल में चालीस लाख। यदि छात्र हरियाणा में सरकारी नौकरी करेगा तो सरकार यह पैसा कई किश्तों में वापिस दे देगी। फैसला दो साल पहले हो गया था लेकिन विरोध के चलते लागू नहीं किया गया। मेडिकल कॉलेज रोहतक के निदेशक डॉक्टर लोहचब ने बताया की ऐसा इसलिए किया गया है की छात्र यहाँ से पढ़कर कही और न चले जाये या प्राइवेट प्रैक्टिस न करने लगे।

सवाल यह है की गरीब छात्र इतने पैसे कहा से लाएगा। कहा जा रहा है की छात्र बैंक से गॉरन्टी दिलवा सकते है। बैंक की गॉरन्टी कैसे मिलेगी ?

रोहतक के एक डॉक्टर ने अपने दो बच्चों का दाखिला कर्नाटक में करवाया क्योंकि दस लाख प्रतिवर्ष कैसे भरेगा ? पिछले साल एक चीफ मेडिकल ऑफिसर के बेटी को भी हरियाणा से बाहर दाखिला लेना पड़ा था।

बालाजी कॉलेज , बल्लभगढ़ में राष्ट्रीय युवा योजना के संस्थापक डॉ. एसएन सुब्बाराव के संस्मरण में पर्यावरण संवर्धन हेतु कार्यक्रम का आयोजन

बालाजी कॉलेज , बल्लभगढ़ में राष्ट्रीय युवा योजना के संस्थापक डॉ एसएन सुब्बाराव की संस्मरण में पर्यावरण संवर्धन हेतु कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इसमें मुख्य अतिथि पदम श्री एवं पदम भूषण से सम्मानित प्रख्यात पर्यावरणविद डॉ अनिल प्रकाश जोशी उपस्थित थे। डॉ जोशी ने पर्यावरण की बिगड़ती स्थिति और मनुष्य की उदासीनता को लेकर चिंता व्यक्त की और कहा कि अब इतनी देर तो हो चुकी है कि मनुष्य यदि पर्यावरण की स्थिति को संभालने की कोशिश करें और अपने आचरण को पर्यावरण के अनुरूप बनाए तब भी लगभग 300 वर्ष इसको ठीक होने में लगेंगे और केवल 10त्न पर्यावरणीय क्षरण को हम ठीक करने की स्थिति में अभी है। दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि इस विषम परिस्थितियों को भी देखकर मनुष्य आज भी सक्रिय नहीं हो रहा है और लगातार वैश्विक स्तर पर प्रदूषण के बढ़ाने की दिशा में काम कर रहा है।

इस अवसर पर भारत सेवा प्रतिष्ठान के चेयरमैन श्री कृष्ण सिंघल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और मनुष्य को अपने स्वभाव में मुख्य रूप से अपनी जरूरतों को कम करने , लालच को छोड़कर शुभ की ओर बढ़ने तथा पर्यावरणीय स्वभाव बनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

कार्यक्रम के आयोजक और बालाजी कॉलेज के निदेशक डॉ जगदीश चौधरी ने कहा कि फरीदाबाद सहित पूरा एनसीआर क्षेत्र पर्यावरण की दृष्टि से प्रकृति के लाडले क्षेत्र के रूप में है परंतु जहां एक ओर दुनिया की सबसे पुरानी पर्वत माला अरावली और दूसरी ओर श्रेष्ठतम नदियों में से एक यमुना तथा तीसरा इसका सबसे उपजाऊ मैदान इसे विश्व की सबसे श्रेष्ठ क्षेत्र के रूप में स्थापित करता है। परंतु हमने इसकी मिट्टी, जल और वायु तीनों को खराब कर दिया है । पूरे शहर में जल पीने योग्य नहीं बचा है।

वायु विश्व में सबसे ज्यादा प्रदूषित है और मृदा भी अपने उपजाऊपन खो चुकी हैं। फरीदाबाद की बिगड़ती स्थिति के बावजूद भी यदि यहां की 35 लाख की जनसंख्या अपने स्वभाव में परिवर्तन नहीं लाती, हिंसा को छोड़ अहिंसा के मार्ग पर नहीं चलते , गंदगी को छोड़ स्वास्थ्य को नहीं अपनाते और मांसाहार को छोड़ शाकाहार की ओर नहीं लौटते तो अपने पतन का कारण खुद बनने की दिशा में है और आज लगभग सभी नागरिक उस कालिदास की स्थिति में है जो जिस डाली पर बैठे हैं उसी को काट भी रहे हैं।

डॉक्टर एसएन सुब्बाराव का कहना कि "एक घंटा देह को और एक घंटा देश को" यह जब हमारा स्वभाव बनेगा तो भारत एक मजबूत राष्ट्र के रूप में आगे बढ़ेगा, की आवश्यकता पर बल दिया।

इस प्रकार पर्यावरण और स्वास्थ्य राष्ट्र के हित में आज के कार्यक्रम में पटना से पानी रे पानी अभियान के संयोजक पंकज मालवीय, राष्ट्रीय पर्यावरण सुरक्षा समिति के अध्यक्ष ज्ञानेंद्र रावत, प्रमुख पर्यावरणविद प्रशांत सिंहा, वाईएमसीए से प्रो अरविंद गुप्ता, सुरेश राठी, जया श्रीवास्तव, इंदौर के संजय गुप्ता सहित लगभग 150 लोगों ने सहभागिता की ।

इस अवसर पर डॉक्टर अनिल जोशी के साथ ही लगभग 20 साइकिल सवार जो कि मुंबई से देहरादून की यात्रा पर हैं वह भी सम्मिलित हुए और अपने अनुभव सांझा किए। बालाजी कॉलेज के प्राध्यापक रविंद्र फौजदार, ममता मलिक, उषा डागर, चेतन प्रकाश , दिनेश कुमारी, ईशु जैन सहित सैकड़ों लोग उपस्थित थे।